परमात्मा ने सिखाया सम्पूर्ण 'राजयोग'

वर्तमान समय यों तो अनेकानेक प्रकार के योग प्रचलित हैं परंतु पतंजलि द्वारा लिखित 'योग दर्शन' के आधार पर 'राजयोग' अधिक प्रचलित है। उस योग प्रणाली में अन्य योग, जिसकी संख्या एक सौ से भी ऊपर है, काफी हद तक, थोड़े रूपान्तर के साथ, समाए हुए-से हैं। अब हम परमपिता परमात्मा द्वारा, जो योग सीख रहे हैं, वह भी राजयोग ही है।

- ब्र. कु. गंगाधर

पतंजलिकृत राजयोग तथा परमपिता परमात्मा शिव-कृत राजयोग में किसी-किसी बात में समता भी है और बहुत सी बातों में महान् अंतर भी है। हम समस्त योग प्रणाली की यहाँ चर्चा न करके, केवल 'समाधि' की चर्चा करते हुए दोनों का तुलनात्मक अध्ययन करेंगे।

दोनों का नाम 'राजयोग'

पहले हमें यह समझ लेना चाहिए कि दोनों का नाम 'राजयोग' क्यों है? इस विषय में यह जानना ज़रूरी है कि बहुत पहले कुछ लोगों की यह विचारधारा थी कि मनुष्य को शारीरिक कुशलता के साधन से ही आत्मिक विकास प्राप्त करना चाहिये। उनकी मान्यता थी कि यह सृष्टि-मंच महाभूतों का ही रचा हुआ खेल है, अत: असामान्य शारीरिक सामर्थ्य द्वारा ही इन पर विजय प्राप्त की जा सकती है। अत: गोरखनाथ इत्यादि ने हठयोग प्रचलित किया जिसमें कि हठ-क्रियाओं, प्राणायाम तथा चौरासी आसनों पर ही बल दिया गया तथा नेति-धोति-बस्ति, त्राटक इत्यादि क्रियायें करके शरीर को सब मलों से निवृत्त करने तथा मन को बांधने के साधन अपनाने पर ज़ोर दिया गया।

परंतु अन्य कुछ लोगों की मान्यता में मन का अधिक महत्व था। उनका कथन था कि सब प्रकार की भौतिक शक्तियों और घटनाओं की बागडोर तथा कर्म-विकर्म का उद्गम मन अथवा चित्त में है। अत: उनका यह मन्तव्य था कि मन को पूर्ण रूप से स्वस्थ संयमी बनाकर, संकल्प शक्ति को शुद्ध करना चाहिये और बढ़ाना चाहिये अथवा चित्त की वृत्तियों का निरोध करना चाहिये। उन्होंने जिस योग मार्ग को स्थापित किया उसका नाम हुआ - 'राजयोग'। पतंजलि-कृत योग मार्ग का नाम 'राज योग' इसलिए हुआ कि यह हठयोग से सहज था और इसे राजा भी कर सकते थे। कुछ लोगों का कथन है कि चूंकि यह अन्य योग मार्गों की अपेक्षा उच्च है, इसलिए यह 'राजयोग' नाम से प्रसिद्ध हुआ।

परंतु परमपिता परमात्मा शिव ने राजयोग सिखाया है, वह उपरोक्त दृष्टिकोण से तो राजयोग है ही, अर्थात् वह योग सभी योगों से श्रेष्ठ है और ऐसा सहज भी है कि राजा भी उसका अभ्यास कर सकते हैं, परंतु इसके अतिरिक्त, उसे 'राजयोग' कहने का एक कारण यह भी है कि मनुष्य उस योग अभ्यास से 'मन जीते जगत्-जीत' अथवा 'माया जीते जगत्-जीत' की उक्ति के अनुसार स्वर्ग में चक्रवर्ती दैवी राजा-पद प्राप्त करता है। श्री लक्ष्मी और श्री नारायण स्वर्ग अथवा वैकुण्ठ के दैवी रानी और राजा हैं जो कि पूर्णत: पावन भी हैं और ताज-तख्त के स्वामी भी हैं। ऐसा ही पद इस राजयोग का कुशलतापूर्वक अभ्यास करने वालों को भी प्राप्त होता है। यदि वे इस योग की पराकाष्ठा या उच्चतम कक्षा में न पहुँच पायें तो भी उन्हें दैवी राज-कुल में उनकी स्थिति के अनुसार देवपद प्राप्त होता है। यह ऐसा राजपद है जिसे कि आजकल के राजा (भूतपूर्व राजा) भी पूज्य पद मानते हैं; तभी तो वे श्रीलक्ष्मी और श्रीनारायण आदि का गायन, वंदन और पूजन करते हैं।

एक अंतर और भी है। पतंजलि ने तो योग को 'चित्त-वृत्ति-निरोध' माना है। मन को वृत्ति-शून्य करने के कारण ही उसे 'राजयोग' कहा गया है। परंतु परमात्मा शिव ने जो योग सिखाया है, इसे 'राजयोग' इस कारण भी कहा गया है कि यह बुद्धियोग है। बुद्धि को राजा, मन को मंत्री तथा कर्मेन्द्रियों को प्रजा से उपमा दी जा सकती है। चूंकि परमात्मा द्वारा सिखाये जाने वाले योग में बुद्धि अथवा ज्ञान द्वारा ही मन को ईश्वरीय स्मृति में मग्न अथवा समाहित किया जाता है, इसलिए भी इसे 'राजयोग' कहा गया है।

पतंजलि के योग से भी सहज

पुनश्च, पतंजलि द्वारा सिखाया गया योग नि:संदेह हठयोग से तो सहज है ही, किन्तु फिर भी उसमें प्राणायाम, आसनों इत्याद को योग अंगों में गिनाया गया है और वृद्ध, नारी, दुर्बल व्यक्ति इत्यादि के लिये इन सबका अभ्यास करना कठिन है और इनमें राजकुलोचित सुगमता तथा सूक्ष्मता नहीं जान पड़ती। परमपिता परमात्मा शिव ने जो योग सिखाया है, वह तो नियम, ईश्वरीय स्मृति और स्वरूप-स्थिति, यम, नियम, धारणा, ध्यान, समाधि ही के श्रेष्ठ अभ्यास को लिये हुए है; उसमें आसन, प्राणायाम इत्यादि की आवश्यकता नहीं है। यों तो पतंजलि ने भी कहा है कि जब मनुष्य आत्म-स्वरूप में स्थित होता है तो उसका स्वत: ही सहज प्राणायाम होता है। उसने आसन के बारे में भी कहा है कि जिस किसी तरह भी कोई सुख से बैठ सके वह आसन है। आज लोग इन दोनों (प्राणायाम

- शेष पेज 9 पर...

बाबा ने जो सिखाया उसमें पढ़ाई भी और प्रालब्ध भी

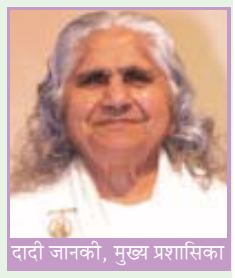
दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

थर्ड सण्डे का सारे विश्व भर में बहुत महत्व है इसलिए कोई कहीं पर भी हो, मिस नहीं करेंगे। सारे विश्व में इसी नुमाशाम के समय योग होता है, तो यह कितनी अच्छी बात है। एक ने कही दूसरे ने मानी शिवबाबा कहे दोनों हैं ज्ञानी। दादी ने ऐसा यह पाठ पढ़ाया जो मुझे आज दिन तक भी याद है। एक ने कही दूसरे ने मानी यह अच्छा है ना! कभी किसी को तकलीफ तो नहीं है ना मेरे से! नहीं। अब घर जाना है, बाबा को घर में याद करना है। शिवबाबा ने ब्रह्माबाबा के द्वारा हमको बहुत कुछ सिखाया है। लगता है यही हमारी पढ़ाई है। वो पढ़ाई के बाद कमाई करते हैं, पैसा कमाते हैं। और हम पढ़ाई के समय ही कमाई करते हैं, कितना बाबा हमें ऊंच पद देने के लिये यत्न कर रहे हैं। यह पढ़ाई हम सब आपस में मिल करके पढ़ते हैं तो कितनी अच्छी पढ़ाई लगती है और साथ-साथ कमाई भी होती है। सबको पढ़ाने वाला एक बाप है। बाबा मुरली चला रहा है, मम्मा ऐसे सुन रही है। ज्ञान योग धारणा सेवा चारों सबजेक्ट के साथ बाबा ने जो भी संयम नियम मर्यादायें बनाके दी हैं, वह भी बहुत अच्छी हैं, घर जाके सतयुग में आयेंगे और दिलवाला मन्दिर अभी का यादगार है, जिसमें हमारे बाबा का यादगार है। यह ड्रामा वन्डरफुल है। ड्रामा में जो कुछ नूंधा हुआ है उसकी जानकारी बाबा ने बहुत अच्छी दी है। दिलवाला मन्दिर वन्डरफुल है। मेरा बाबा दिलवाला है, जो हमारे दिल में है, वही दिमाग में है। दिमाग में और कुछ बात नहीं है, जो दिल में बैठा है, क्योंकि अब घर जाना है... यह गीत बहुत अच्छा है। घर जाने की तैयारी है ना। घर कहाँ है? 5 तत्वों से भी पार है, हमारा घर वहाँ है। हम सब एक ही घर में रहने वाले, एक ही बाप के बच्चे हैं इसलिए सब एक साथ जायेंगे ना, तो यह कितनी खुशी की बात है। इस संगम पर शरीर में होते हुए हम कहाँ के रहने वाले हैं, यह भान आता है और क्या कर रहे हैं?

हमारा बिज़नेस कौनसा है? हम भी बिज़नेसमैन हैं ना, लेकिन हम बिज़ी भी नहीं हैं, लेज़ी भी नहीं हैं क्योंकि बिज़नेस में कमाई बहुत होती है इसलिए वो कभी भी लेज़ी नहीं होता है। पढ़ाई पढ़ते ही कमाई कर रहे हैं, कितना अच्छा बिज़नेस बाबा ने हमको अपना बनाके सिखाया है। यह पता नहीं था हमारा बाबा इतनी ऊँची पढ़ाई पढ़ाके इतनी कमाई कराता रहेगा। कितनी अच्छी लाइफ बाबा ने बनाके दी है। खास हम ब्राह्मणों को तो यह स्मृति आई है कि हम कौन हैं? किसके हैं? यह जन्म हमारा अलौकिक है।

उसमें अभी तक भी बाबा हमारी पढ़ाई पालना कर रहा है। बाबा से जो मिलता है उसे जीवन में ला करके जीते हैं तो सब राज़ी खुशी रहते हैं। कभी कोई नाराज़ नहीं होता है। कई आत्मायें कहती हैं तुम हमारे से क्या चाहती हो? आज 5-6 बहनें आयी थी। मैंने कहा आपकी शक्लें देख करके ही मुझे बड़ी खुशी हुई। बाबा के बच्चे सब खुश राज़ी हो यह पदमापदम भाग्य है। हम बाबा के आगे मुरली सुनते थे तो कांध ऐसे ऐसे करते थे, तो बहुत अच्छा लगता था। मतलब बाप का पढ़ाई बहुत अच्छी है, पढ़ाई से प्यार होने से संगम का समय सफल होता है। संगम के समय को सफल करने का भाग्य अभी प्राप्त है जो फिर सारे कल्प में ऐसा चांस नहीं मिलेगा।

हम ब्राह्मण आत्माओं को न चमड़ी का अहंकार है, न दमड़ी का अहंकार है। लोभ भी किसका रखें, क्या चाहिए? कुछ नहीं चाहिए। कितने खुशनसीब हैं जो बाबा हमारे दिल की बातें सुन रहा है, देख भी रहा है। हम भी सिर्फ बाबा को देखती रहूँ तो अच्छा है। ऐसा क्या है बाबा में जो बाबा को देखते ही दिलखुश मिठाई खाया जैसा अनुभव होता है। दिल को खुश रखना, चेहरे से खुशी की झलक दिखाना क्योंकि सबसे अच्छी है खुशी। तो जो ऐसे खुश हैं वो भाग्यवान हैं।

साधनों के साथ ज्ञान योग का भी रखें ख्याल

दादी हृदयमोहिनी
अति.मुख्य प्रशासिका

हम सभी एक दूसरे को देख खुश होते हैं, क्यों? क्योंकि हमको बाबा ने सारे विश्व में से चाहे इण्डिया हो या कोई भी स्थान, सब जगह से चुनकर सकीलधा बनाया है। कितना सुन्दर हॉल बनाकर दिया है, जिसमें मेरे बच्चे बैठें, उन्हें ज़रा भी दु:ख न हो। इतना ख्याल रखता है बाबा बच्चों का। बाबा को सभी बच्चों से विशेष प्यार है। बच्चों को देखकर बाबा को बहुत अच्छा लगता है कि इन्होंने हिम्मत से खुद को बनाया है। बाबा का बच्चों की एक एक चीज़ पर अटेन्शन जाता है। हमने साकार बाबा को देखा, बच्चों की खुशी के लिए अपनी जान देने को भी तैयार रहता था, बस मेरे बच्चों को दु:ख न हो। एक एक बच्चे से बाबा को बहुत प्यार है। हम सभी भी बाबा के प्यार के हकदार हैं। जितना बाबा का प्यार स्वीकार करते रहेंगे उतना ही अपने को भाग्यवान समझेंगे। अगर कोई बीमार भी होता था तो बाबा कहता था बच्चे की बीमारी मुझे लग जाये, बच्चे को नहीं। क्या हमें भी बाबा से इतना प्यार है? प्यार में तो क्या नहीं कुर्बान किया जा सकता। स्थूल वस्तु नहीं, सूक्ष्म संस्कारों को बाबा पर कुर्बान करना, क्या बड़ी बात है। बाबा हमारा कितना ध्यान रखते हैं, यह देख बहुत खुशी होती है। दिल से निकलता है वाह बाबा वाह! बाबा ने बच्चों के लिए कितने सुख के साधन बनाये हैं। सुबह से लेकर रात तक जो भी दिनचर्या बीतती है उसमें कितने अथाह सुख के साधन हैं। हम जब यहाँ आते हैं तो आपका जीवन देख हमें भी हमारा बचपन याद आ जाता है। बाबा ने हमें भी बहुत सुख के साधन दिये थे। फिर सेवा में लग गये, सेवा में तो अपने अपने ढंग के स्थान होते हैं लेकिन जब तक साकार बाबा के साथ थे तो बहुत सुख के साधन मिले, जैसे अभी आपको मिले हैं। आपके भाग्य को देख खुशी होती है - वाह मेरे भाई बहनें वाह! बाबा ने प्यार से आपके लिए यह स्थान बनवाया है। भले दूसरों के सहयोग से बना है लेकिन बनवाने वाला कौन? बाबा। कदम-कदम पर वाह बाबा वाह का अनुभव करते रहो। वैसे तो साधन सेन्टर्स पर भी होते हैं पर यहाँ संगठन में हर प्रकार के साधन होना कम बात नहीं। आपको जो यहाँ साधनों के साथ ज्ञान और योग की पालना मिल रही है, उसको स्मृति में रख खुशी में झूमना चाहिए। जैसी बाबा अभी आपकी पालना कर रहा है, ऐसी पालना सतयुग में राजकुमार और राजकुमारियों की भी नहीं होती। इतना नशा है? आप जैसे भाग्यवान और कहीं नहीं हैं क्योंकि सकीलधे हो ना। एक एक को बाबा ने चुनकर इकट्ठा किया है, किसी को ईस्ट से और किसी को वेस्ट से, अभी सभी मिलकर एक हो गए हैं।

हमें तो बाबा ने छोटेपन में इतनी अच्छी पालना दी, लेकिन आप बड़ों को इतनी अच्छी पालना मिल रही है। बाबा ने आपको तन, मन और धन तीनों सुख के साधन दिये हैं। संसार में जो रॉयल लोग होते हैं उन्हें सिर्फ तन का सुख होगा, मन का नहीं। हमें तो सारे सुख हैं। चेक करो कि हम सदा खुशी में रहते हैं? क्योंकि संगठन में बातें तो आयेंगी, हमें भी अनुभव है। संगठन में एक दो के गुण देख उमंग-उत्साह से आगे बढ़ते जाओ, बातों में नहीं जाओ। संगठन का भी फायदा उठाओ। देखो, आज संगठन में कितनी रॉयल रीति से बैठे हो, सतयुग भी इसके आगे कुछ नहीं। जो अन्तर का सुख यहाँ है, वह सतयुग में भी नहीं होगा। बाहर कुछ भी होता रहे लेकिन बाबा हमें हर हाल में खुश रखता है। ऐसा बाबा फिर कल्प के बाद ही मिलेगा। बाबा ने हमें सैलवेशन के साथ जो दिल की खुशी दी है वह कहीं नहीं मिलती। आपकी जीवन साधारण नहीं, भले भाव-स्वभाव का टकराव तो संगठन में होता ही है लेकिन बाबा का प्यार सब भुला देता है। ज्ञान ताकत देता है। सदा दिल से यही निकलता रहे वाह मेरा बाबा वाह! दुनिया में क्या लगा पड़ा है और बाबा ने हमारा भाग्य कितना श्रेष्ठ बना दिया। खुशी होती है ना? यहाँ खुशी के बिना और ही क्या, अगर थोड़ा बहुत कुछ होता भी है, वह हिसाब-कितना संगठन में चुक्तू हो रहा है। बाबा हमें रोज़ खुशी का खज़ाना देता है, कमाल है बाबा की।